# राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कला शिक्षा
## एक परिप्रेक्ष्य

सुष्मिता लखयानी*

भारत की शिक्षा पद्धति में कला शिक्षा पर विचार-विमर्श समय के साथ और परिपक्व हुआ है और अब नीतिगत परिवर्तनों में इसे महत्वपूर्ण स्थान मिल रहा है। पूर्व की नीतियाँ जहाँ कला को मुख्यतः सृजनात्मकता और आत्म-अभिव्यक्ति के लिए मूल्यवान मानती थीं, वहीं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 ने इसे अपने शैक्षिक ढांचे का एक अभिन्न अंग मानते हुए केंद्र में स्थापित किया है। एन.ई.पी. 2020 ने शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव लाते हुए कला और विज्ञान, पाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियाँ तथा व्यावसायिक और शैक्षणिक धाराओं के बीच जो कठोर भेद पहले विद्यमान था, उसे अब समाप्त कर दिया है। यह नीति संज्ञानात्मक, भावनात्मक और सामाजिक क्षमताओं को विकसित करने में कला के महत्वपूर्ण योगदान को स्वीकार करती है। वर्तमान शोध का मुख्य उद्देश्य भारत में एन.ई.पी. 2020 के परिप्रेक्ष्य में कला शिक्षा के निहितार्थों पर एक सार्थक चर्चा को जन्म देना है। एन.ई.पी. 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली के संपूर्ण रूपांतरण के लिए एक विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत करती है, जिसमें शिक्षा के सभी स्तरों पर रचनात्मक कलाओं पर आधारित एक व्यापक शिक्षाशास्त्र को समाहित किया गया है। प्रस्तुत शोधपत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कलात्मक शिक्षा को विषयवस्तु एवं शिक्षण पद्धति दोनों ही स्वरूपों में समाहित करने संबंधी नियमों एवं उपबंधों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। साथ ही, यह विभिन्न शैक्षिक सुधारों में नीतिगत उपागमों के माध्यम से कला शिक्षा के सूक्ष्म विचारों का भी परिशीलन करता है। गुणात्मक अनुसंधान पद्धति का अवलंबन करते हुए, यह अध्ययन भारत में कला शिक्षा के क्रमिक विकास का पता लगाने हेतु नीति दस्तावेजों, पुस्तकों तथा शोध लेखों जैसे गौण स्रोतों पर आधारित है। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 से संपुष्ट, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 कला शिक्षा को एक समावेशी, समतामूलक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध प्रणाली में रूपांतरित करने का संकल्प रखती है। इस शोधपत्र का मुख्य ध्येय भारत के शैक्षिक संवाद में कला शिक्षा के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक निहितार्थों पर नीति निर्धारकों, शिक्षकों तथा समुदाय के मध्य गहन विचार-विमर्श को प्रोत्साहित करना है, सृजनात्मकता, समालोचनात्मक चिंतन एवं सांस्कृतिक बोध को संवर्धित करने में इसकी महत्ता को रेखांकित करना है।

**अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता*, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय 110 007

## परिचय

"मैं कला को परिभाषित नहीं करूँगा, बल्कि इसके अस्तित्व के कारण के बारे मैं स्वयं से प्रश्न करूँगा और यह पता लगाने की कोशिश करूंगा कि क्या इसकी उत्पत्ति किसी सामाजिक उद्देश्य से हुई है या हमारे सौंदर्य आनंद की पूर्ति की आवश्यकता से हुई है, या यह अभिव्यक्ति के किसी आवेग से उत्पन्न हुई है, जो हमारे अस्तित्व का आवेग है" (टैगोर, 1917, पृष्ठ 16)।

टैगोर के अनुसार बौद्धिक एवं सौंदर्य विकास दोनों ही महत्वपूर्ण हैं, इसी वजह से रंगमंच, दृश्य कला, नृत्य, संगीत और लेखन जैसी कलाओं को अत्यंत महत्व दिया जाता था। इसका कारण था कि यह व्यक्ति की आत्मा के उत्थान के लिए जरूरी है और इसी वजह से विद्यार्थियों को इनमें संलग्न होना चाहिए (लेसर, 2015)। भिन्न कारणों से कला क्रियाकलापों में भाग लेना महत्वपूर्ण हो जाता है। कला शिक्षा संस्कृति के संरक्षण और प्रशंसा को प्रोत्साहन देती है। इससे विद्यार्थी कला के अनेक रूपों से अवगत होते हैं, जिनका संबंध विभिन्न रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक प्रथाओं से है। इस प्रकार कला शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों में इतिहास और विभिन्न परंपराओं के प्रति सम्मान बढ़ता है (शर्मा, 2012)। यह विद्यार्थियों को उनमें छिपी कल्पना शक्ति को पहचानने एवं संगीत, नाटक, नृत्य और चित्रकला जैसे विभिन्न कलाओं के द्वारा अपने विचार व्यक्त करने की दक्षता उत्पन्न करने हेतु रचनात्मक पक्ष को प्रोत्साहन देती है। इस तरह की रचनात्मक भागीदारी आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देती है, क्योंकि विद्यार्थी संसार को समझने और उसके बारे में तर्क करने की कोशिश करते हैं (सुधीर, 2015)। एन.ई.पी. 2020 भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन की सूत्रधार है, जो समावेशी और समग्र शिक्षा के नए रूप को दर्शाती है। यह नीति सुझाव देती है कि रचनात्मकता और नवीनता पर केंद्रित प्रत्येक शिक्षा प्रणाली में कला को अवश्य स्थान देना चाहिए।

एन.ई.पी. 2020 एक समग्र परिभाषा प्रस्तुत करने का प्रयास है, जिसमें शिक्षा को उस नींव के रूप में देखा गया है जिस पर समाज की प्रगति निर्भर करती है और व्यक्ति अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों की प्राप्ति करता है। इस नीति की आधारशिला कला शिक्षा की भूमिका पर नवीन बल है। अतीत में शैक्षिक योजनाओं ने रचनात्मक सोच और मौलिकता के विकास में कला शिक्षा के योगदान को महत्व दिया था *(कंट्री रिपोर्ट आर्ट एजुकेशन इन इंडिया, 2010)*, किंतु एन.ई.पी. 2020 द्वारा इसे और उन्नत स्थान प्रदान किया गया है जिससे अब शैक्षिक प्रणाली में कला की शिक्षा को विशेष महत्व प्राप्त है।

"कला और विज्ञान के बीच, पाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों के बीच, व्यावसायिक और शैक्षणिक धाराओं के बीच कोई कठोर विभाजन नहीं होना चाहिए, ताकि सीखने के विभिन्न क्षेत्रों के बीच हानिकारक पदानुक्रम और अवरोधों को समाप्त किया जा सके" (एन.ई.पी. 2020, पृष्ठ 5)। एन.ई.पी. 2020 के अनुसार कला और संस्कृति को प्रारंभिक से उच्चतर स्तर तक कक्षाओं में पढ़ाया जाना चाहिए क्योंकि कला भावनात्मक, संज्ञानात्मक और सामाजिक कौशल के विकास में महत्वपूर्ण योगदान

देती है। इसमें वर्णित कला शिक्षा केवल पारंपरिक शैक्षिक पाठ्यक्रमों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक समत्व दृष्टिकोण अपनाती है, जो सभी शैक्षिक स्तरों पर विभिन्न पाठ्यक्रमीय लक्ष्यों और अधिगम के परिणामों को समृद्ध करने की अनुशंसा करती है। इस प्रकार की शिक्षा का लक्ष्य युवाओं को रचनात्मक, सहानुभूतिपूर्ण और सांस्कृतिक रूप से कुशल बनाना है, जो भविष्य की जटिल और आपस में जुड़े संसार के लिए आवश्यक क्षमताएँ हैं।

चित्र 1 शिक्षा और समाज में कला की प्रभावशाली भूमिका को दर्शाता है, जिसमें उसके उद्देश्य, शैक्षिक महत्व, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उसका एकीकरण तथा समग्र और समावेशी शिक्षा में उसकी प्रभावशीलता को दर्शाया गया है।

## पृष्ठभूमि

### *भारतीय संदर्भ में कला एवं कला शिक्षा*

भारत में कला की समृद्ध ऐतिहासिक परंपरा के संरक्षण को राजसी संरक्षण और कलाकार संघों व कार्यशालाओं की स्थापना से बहुमूल्य योगदान मिला है। इससे मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तुकला और वस्त्र डिजाइन जैसी विविध कला शैलियों के विकास को प्रोत्साहन मिला (कृष्णन, 2020)। मध्यकालीन युग में कला शिक्षा राजाओं और स्थानीय शासकों के संरक्षण में विकसित हुई, जहाँ कला की प्रसिद्ध संस्थाएँ और कार्यशालाएँ स्थापित थीं। मुगल और राजपूत दरबारों ने विभिन्न संस्कृतियों के मिलन स्थल के रूप में सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया और

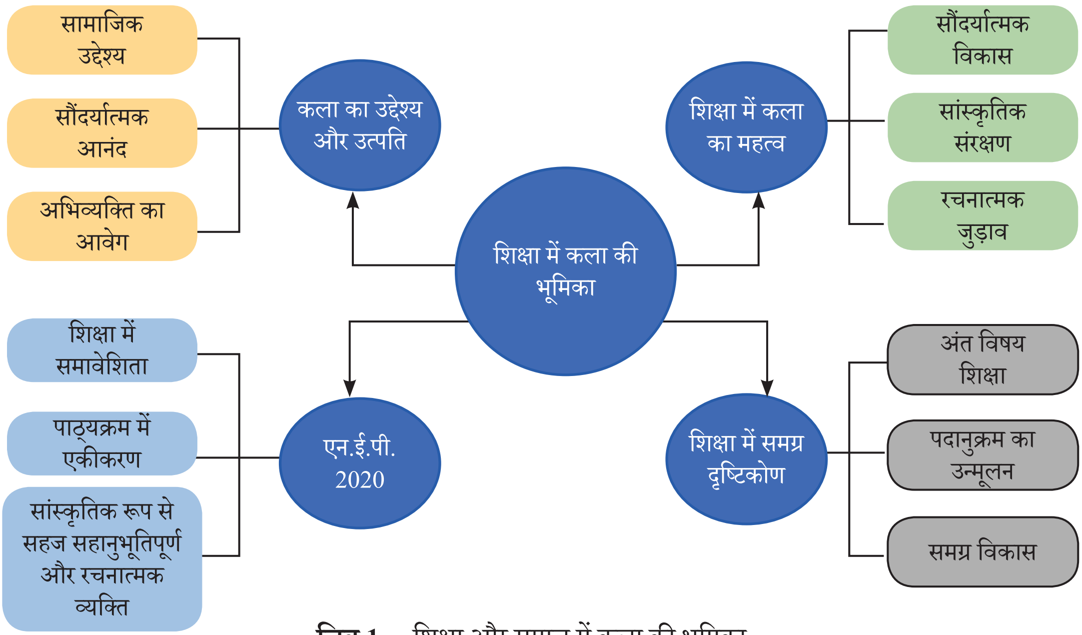


**चित्र 1**— शिक्षा और समाज में कला की भूमिका

कलाकारों की प्रतिभा को पोषित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया (रॉबर्टसन और वेबर, 2007)। भारत में कला शिक्षा की यात्रा एक क्रमिक परिवर्तन रही है। इस विकास को विभिन्न शैक्षिक नीतियों और रिपोर्टों से दिशा मिली, जिन्होंने धीरे-धीरे समग्र विकास में कला शिक्षा के महत्व को मान्यता दी (कंट्री रिपोर्ट आर्ट एजुकेशन इन इंडिया डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन इन आर्ट्स एंड एस्थेटिक्स आर्ट एजुकेशन इन इंडिया, 2010)। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के दौरान जब कला विद्यालयों और महाविद्यालयों की शुरुआत हुई, तो इनका उद्देश्य भारतीय कलाकारों को यूरोपीय अकादमिक परंपराओं में शिक्षित करना था, जिसके परिणामस्वरूप औपनिवेशिक ढाँचे के भीतर कला शिक्षा को संस्थागत बनाया गया (शर्मा, 2012)।

### *नीतिगत परिप्रेक्ष्य— भारतीय शिक्षा प्रणाली में कला शिक्षा*

स्वतंत्रता के बाद कला शिक्षा में विभिन्न चरणबद्ध परिवर्तन हुए, जिनमें राष्ट्र निर्माण, एक विषय के रूप में कला, अन्य विषयों के साथ कला का एकीकरण तथा कैरियर और व्यावसायिक विकास जैसे मुद्दे शामिल थे, जिनसे तत्कालीन शिक्षा प्रणाली को जूझना पड़ा। अन्य परिवर्तनों के अतिरिक्त, सांस्कृतिक संरक्षण भी भारतीय शिक्षा प्रणाली के कला शिक्षण के विचारों के विकास का एक अन्य प्रमुख पहलू रहा है, जिसकी शुरुआत महज व्यावसायिक प्रशिक्षण के रूप में हुई थी; संग्रहालयों और दीर्घाओं जैसी संस्थाओं ने भारत की समृद्ध कलात्मक विरासत से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर ज्ञान के स्रोत के रूप में इस संबंध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

एन.ई.पी. 1968 वह आधारशिला थी जिस पर वर्तमान कला शिक्षा विकसित हुई, क्योंकि यह पहली बार सुझाव दिया गया था कि कला को विद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए और विद्यालयों और महाविद्यालयों में कला का प्रयोग वैसा ही होना चाहिए जैसा विश्वविद्यालय स्तर पर होता है (एन.ई.पी., 1968)।

एन.ई.पी. 1986 का उद्देश्य मानव संसाधन का समग्र विकास था। इस नीति का उद्देश्य पहुँच, समानता, मात्रा, उपयोगिता और वित्तीय प्रावधान जैसी समस्याओं का समाधान करना था। इस नीति का मुख्य उद्देश्य शैक्षिक अवसरों को समान बनाना था। नीति में विशेष रूप से असमानताओं को दूर करने और शैक्षिक अवसरों को समान बनाने पर बल दिया गया। जहाँ तक कला शिक्षा का संबंध है, नीति में इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया, क्योंकि उस समय विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत को अधिक उन्नत बनाने और शैक्षिक अवसरों की समानता पर अधिक बल था। माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में इस नीति में कई विषयों को शामिल किया गया, जिनमें कला शिक्षा भी एक हिस्सा थी। एन.ई.पी. 1986 में कहा गया कि इस रूपरेखा में माध्यमिक स्तर तक कला शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों को संवेदनशील बनाना है, ताकि रेखा, रंग, रूप, गति और ध्वनि में सौंदर्य तथा सांस्कृतिक विरासत का ज्ञान और समझ विकसित हो सके (एन.ई.पी. 1986)। कला एवं कला शिक्षा को उच्च शिक्षा में रुचि का विषय या फिर मनोरंजन का विषय तो माना गया मगर कभी इसे जीवन के सार के रूप में नहीं देखा गया। एन.ई.पी. 2020 में 8वें पृष्ठ

में वर्णित है की एक भारत-केंद्रित शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना की गई है जो सभी को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करके हमारे राष्ट्र को स्थायी रूप से एक समतापूर्ण और जीवंत ज्ञान से समाज को बदलने में सीधे योगदान देती है इसी संदर्भ में नीति-दस्तावेज के 7वें पृष्ठ पर उल्लिखित है कि "भारतीय जड़ों और गौरव से बंधे रहना और जहाँ प्रासंगिक हो वहाँ भारत की समृद्ध और विविध प्राचीन और आधुनिक संस्कृति एवं ज्ञानप्रणालियों और परंपराओं को शामिल करना और उससे प्रेरणा पाना"। एन.ई.पी. 2020 का मानना है कि कला, शिल्प और खेल सहित मानव प्रयास के सभी क्षेत्र मानव एवं सामाजिक उन्नति दोनों के लिए मूल्यवान हैं। इसलिए विद्यार्थियों को समग्र विकास प्राप्त करने के लिए अपने पाठ्यक्रम में सक्रिय रूप से इनका अनुसरण करना चाहिए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 में कला शिक्षा के महत्व को बच्चों के जीवन में इस प्रकार वर्णित किया है— "बच्चों को कला के मूल तत्वों से परिचित करने से उन्हें बहु-संवेदी उद्दीपनों को व्यवस्थित करने और समझने तथा उनकी सौंदर्य संबंधी संवेदनाओं को विकसित करने के लिए कई रूपरेखाएँ मिलती हैं। ध्वनि, रंग या गति, गति के तत्वों पर आधारित सरल अभ्यासों की भावनाओं, विचारों और कार्यों के साथ जोड़ने के लिए बच्चों के दैनिक संदर्भों पर लागू किया जा सकता है" (एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022, पृष्ठ 106)। कला को अकादमिक पाठ्यक्रम में शामिल करना अनिवार्य है। वैकल्पिक रूप से कला शिक्षण दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है, इस रणनीति को एन.ई.पी. 2020 द्वारा कार्यान्वयन के लिए अनुशंसित किया गया है ताकि कला को न केवल अलग-अलग विषयों के रूप में पढ़ाया जाए बल्कि अन्य विषयों के साथ भी मिलाया जाए। कला भाषा को सीखने में भी सहायक हो सकती है, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 के अनुसार, "पढ़ने और लिखने की अवधारणा (मसलन उद्गामी साक्षरता, समझकर पढ़ना और लेखन अभिव्यक्ति) को मौखिक भाषा के विकास; अर्थ निर्माण (जिसमें चित्रों व अन्य प्रतीक-व्यवस्थाओं जैसे इशारे, चेहरे के भाव, कला, संगीत, नृत्य, नाटक व खेल का मतलब समझना और व्याख्या करना शामिल है) और छपी हुई सामग्री के जरिए विकसित किया जाता है" (पृष्ठ 78)। नतीजतन, विद्यार्थियों को अपने अध्ययन के हिस्से के रूप में संगीत और विज्ञान या इतिहास और दृश्य कलाओं के बीच संबंधों को समझने का मौका मिलता है। इससे विद्यार्थी विभिन्न मुद्दों के बारे में गहराई से सोचने के लिए प्रेरित होते हैं, जिससे उनमें आलोचनात्मक सोच के कौशल विकसित होता है। शैक्षिक नीतियों में शिक्षकों के निरंतर पेशेवर विकास के महत्व पर ध्यान दिया जा रहा है। इसमें यह स्वीकार किया गया है कि रचनात्मक कला और डिजाइन में कुशल होने के अलावा, प्रभावी कला शिक्षण के लिए उन लोगों की आवश्यकता होती है जो शैक्षिक सिद्धांतों के साथ-साथ अभ्यास भी जानते हों। वास्तव में, पेशेवर विकास पर यह जोर सुनिश्चित करता है कि शिक्षक बच्चों को समृद्ध और विचारोत्तेजक अधिगम के अवसर प्रदान करने के लिए अच्छी तरह से तैयार हैं।

यह शोधपत्र एन.ई.पी. 2020 के माध्यम से भारत के व्यापक नीतिगत संदर्भ में कला शिक्षा की ऐतिहासिक यात्रा को दर्शाता है जो भारत में शैक्षिक नीतियों के व्यापक दायरे में स्थित है। इस अध्ययन का उद्देश्य एक व्यापक संरचना बनाना है जिससे कि एन.ई.पी. 2020 में कला शिक्षा के सैद्धांतिक निहितार्थों को स्पष्ट किया जा सके।

यह शोध भारत में कला शिक्षा के सैद्धांतिक आधार एवं शैक्षिक संवाद के बीच एक कड़ी स्थापित करके समस्या को और अधिक समझने योग्य बनाने का प्रयास करता है। यह अनुसंधान मुख्यतः एन.ई.पी. 2020 में कला शिक्षा के सैद्धांतिक निष्कर्षों को उजागर करने पर केंद्रित है, ताकि नीति निर्माताओं, शिक्षकों एवं समुदाय के बीच ऐसे विमर्श को प्रोत्साहित किया जा सके, जो शिक्षा को एक समावेशी, समतामूलक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध प्रणाली में परिवर्तित कर सके।

## शोध विधि

यह अध्ययन पूर्णतः गुणात्मक प्रकृति का है और एन.ई.पी. 2020 में कला शिक्षा के विमर्श में गहराई से प्रवेश करने का एक प्रयास है। यह शोध भारत की एन.ई.पी. 2020 के संदर्भ में कला शिक्षा के प्रभावों पर चर्चा को जन्म देता है। एन.ई.पी. 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली के पूर्ण रूपांतरण के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है, जिसमें विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर एक समग्र और रचनात्मक कला-आधारित शिक्षण पद्धति को अपनाने का सुझाव दिया गया है। यह शोधपत्र नीति के उन प्रावधानों का अन्वेषण करता है, जो कला शिक्षा को न केवल शैक्षिक विषयवस्तु के रूप में बल्कि शिक्षण की विधि के रूप में भी शामिल करने की वकालत करते हैं। यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों जैसे कि नीतिगत दस्तावेज़ों, रिपोर्टों और शैक्षणिक लेखों पर आधारित है, जिनके माध्यम से भारत में कला शिक्षा के विकास की प्रक्रिया को समझने का प्रयास किया गया है। इन दस्तावेजों का विश्लेषण समय के साथ कला शिक्षा में आए दृष्टिकोणों और प्राथमिकताओं में बदलाव की गहरी समझ प्रदान करता है।

## विमर्श

नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023, कला शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित करती है, “कला में वैचारिक ज्ञान का अर्थ है स्थान, रंग, रूप, गति, कथन, सामग्री, उपकरण, संतुलन, अनुपात, सौंदर्य, सामंजस्य और अन्य तत्वों और सिद्धांतों के बारे में जानना”।

“यथो हस्त तथो दृष्टि  
यथो दृष्टि तथो मनः  
यथो मनः तथो भाव:  
यथो भाव तथो रस:”

(रा.शै.अ.प्र.प. 2023, पृष्ठ 355)

नाट्यशास्त्र में उपरोक्त श्लोक अंकित है जिसका अर्थ है, “जहाँ हाथ (क्रिया) जाता है, वहाँ दृष्टि जाती है जहाँ दृष्टि जाती है, वहाँ मन (विचार) जाता है, जहाँ मन जाता है, वहाँ भावना जाती है जहाँ भावना जाती है, वहाँ सौंदर्य आनंद आता है” (पृष्ठ 355)। इसके अतिरिक्त, एन.सी.एफ.-एस.ई.

2023 में 'पंचकोश विकास' का उल्लेख किया गया है, जो मानव विकास की भारतीय परंपरा में निहित पाँच परतों पर आधारित विकास की अवधारणा है। पंचकोश विकास का तात्पर्य प्राचीन भारतीय दर्शन में निहित मानव व्यक्तित्व के पंच परतीय विकास से है। इसके बजाय, यह एक अनिवार्य हिस्सा है जो समग्र शिक्षा से संबंधित है और कला शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों के विकास पर पूरी तरह से ध्यान केंद्रित करता है। उनके पास अन्नमय कोश, भौतिक शरीर; प्राणमय कोश, ऊर्जा शरीर; मनोमय कोश, मानसिक शरीर; विज्ञानमय कोश, ज्ञान शरीर और आनंदमय कोश, पाँच कोशों में सबसे भीतरी आनंद का शरीर होता है; यह आत्मानुभूति एवं प्रसन्नता का प्रतीक है, जो प्रदर्शन कलाओं के माध्यम से विद्यार्थियों की अंतरतम परत का पोषण करता है। अन्नमय कोश भौतिक शरीर पर कार्य करता है और नृत्य, मूर्तिकला एवं दृश्यकला के माध्यम से सूक्ष्म गतिशीलता (फाइन मोटर स्किल्स) और नेत्र-हस्त समन्वय का विकास करता है। दूसरा है, प्राणमय कोश, जो शरीर के भीतर प्राण के संतुलन से संबंधित है और इसे विभिन्न प्रकार की लयबद्ध गतिविधियों एवं श्वास अभ्यासों के माध्यम से सक्रिय किया जाता है। मन में भावनाओं और विचारों से जुड़ा मनोमय कोश, रंगों, संगीत और रंगमंच जैसी रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से आत्म-अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करता है। विज्ञानमय कोश बुद्धि और विवेक का प्रतिनिधित्व करता है, जो आलोचनात्मक चिंतन और सौंदर्यबोध तथा सांस्कृतिक चेतना को विकसित करता है। एन.सी.एफ.एस.ई. 2023 ने पंचकोश विकास को कला शिक्षा प्रणाली में सम्मिलित करते हुए शिक्षा को समग्र, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध, नवाचारी और कल्याणकारी बनाने का प्रयास किया है।

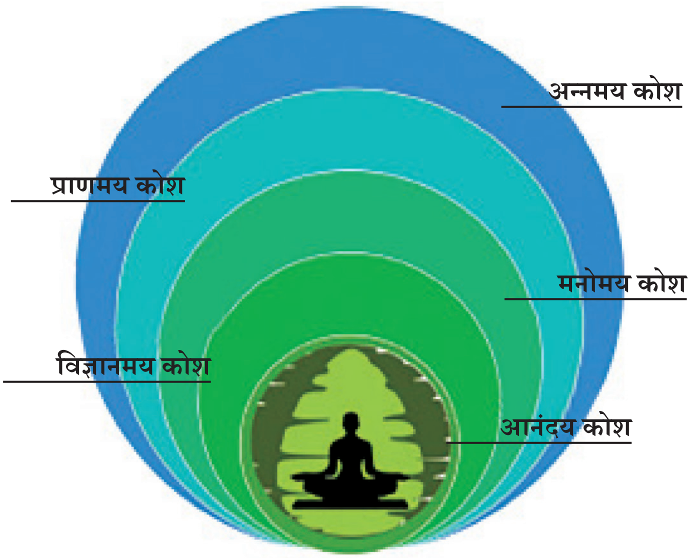


**चित्र 1.2**— पंचकोश विकास, एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 (पृष्ठ 53) (अनुवादित)

दस्तावेज में यह स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि पारंपरिक कलाओं और सांस्कृतिक विरासत को युवा विद्यार्थियों की समग्र और एकीकृत शिक्षा प्रणाली में अभिन्न रूप से समाहित किया जाएगा।

एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 ने कला शिक्षा में कुछ लंबे समय से चली आ रही समस्याओं से निपटा है। ऐसा ही एक मुद्दा पाठ्यक्रम में कला को हाशिए पर रखना था, जहाँ इसे गणित और विज्ञान जैसे विषयों से कम महत्वपूर्ण माना जाता था। एन.ई.पी. 2020 ने सीखने के लिए एक बहु-विषयक दृष्टिकोण पेश करके इसे संबोधित किया है जहाँ कला को व्यापक विद्यालयी पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। इसका मतलब है कि विद्यार्थियों को सर्वांगीण शिक्षा मिलेगी, जो अकादमिक उत्कृष्टता के बराबर कलात्मक रचनात्मकता और अभिव्यक्ति को मान्यता देती है। एक और मामला कला सिखाने के लिए खराब शैक्षणिक रणनीतियाँ थीं। विभिन्न शैक्षिक चरणों में कला शिक्षकों के लिए उल्लिखित शैक्षणिक सिद्धांत और विधियाँ। उदाहरण के लिए, प्रारंभिक चरण के दौरान, अभिव्यक्ति और संचार पर जोर दिया जाता है जबकि मध्य और माध्यमिक चरण कला को सोचने, बनाने और उसकी सराहना करने में विशिष्ट कौशल विकसित करने के बारे में होते हैं। इसलिए, चरण-विशिष्ट दृष्टिकोणों का उपयोग करके, कलात्मक शिक्षा अधिक प्रभावी होने के साथ-साथ आकर्षक भी बन जाती है क्योंकि यह विद्यार्थियों की विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करती है। कला के अच्छे तरह से प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता को भी संबोधित किया गया। एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 कला शिक्षकों के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास पर जोर देते हैं। सार्थक शिक्षण अनुभव सुनिश्चित करने के लिए, कलात्मक कौशल पर्याप्त नहीं हैं क्योंकि उन्हें शैक्षिक सिद्धांतों और प्रथाओं का ज्ञान भी होना चाहिए। एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.एस.ई. 2023 के अनुसार प्रशिक्षकों की सूची में स्थानीय कलाकारों और विशेषज्ञों को शामिल किया गया है। इससे विद्यार्थियों के सीखने के माहौल में भी निखार आता है। ऐसी नीतियों को लागू करने में संसाधनों का वितरण एक बड़ी चुनौती है। कई विद्यालयों, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों और वंचित क्षेत्रों में स्थित विद्यालयों में कला के प्रभावी शिक्षण के लिए पर्याप्त बुनियादी ढाँचा या सामग्री नहीं है। सभी विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण कला शिक्षा उपलब्ध हो सके, इसके लिए संसाधनों, प्रशिक्षण और बुनियादी ढाँचे पर महत्वपूर्ण निवेश होना चाहिए। एक और चुनौती विद्यालय स्तर पर इस विषय का आकलन करने के उपयुक्त तरीके तैयार करना है। कला में कई नवीन घटक हो सकते हैं जिन्हें अकेले पारंपरिक तरीकों से मूल्यांकन के द्वारा पर्याप्त रूप से मापा नहीं जा सकता है। कला पोर्टफोलियो और समूह प्रदर्शन एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 द्वारा अनुशंसित कुछ वैकल्पिक मूल्यांकन रणनीतियाँ हैं जो विद्यार्थियों के बीच उनकी कलात्मक क्षमता और विकास पर अधिक व्यापक निर्णय प्रदान कर सकती हैं।

ऐसा माना जाता है कि कला का अन्य शैक्षणिक विषयों की तुलना में करियर के अवसरों के मामले में तथा विशेषकर भारतीय संदर्भ में कम महत्व है। इन

दृष्टिकोणों को बदलने के लिए समाज में जागरूकता की आवश्यकता है कि ललित कला-शिक्षा किसी व्यक्ति को पूर्ण रूप से विकसित होने और विभिन्न पेशेवर मार्ग प्रशस्त करने में कितनी महत्वपूर्ण हो सकती है। एन.ई.पी. 2020 ने कला शिक्षा में समावेशी विकास पर जोर दिया है। यह सुनिश्चित करता है कि दिव्यांग बच्चों सहित सभी बच्चे कला सीखने की प्रक्रिया में भाग लेने में सक्षम हों। नियमों में ऐसी अनुकूलन विधियाँ और सहायक तंत्र शामिल हैं, जो किसी भी विद्यार्थी को कला कार्यक्रमों में भाग लेने और लाभ उठाने में सक्षम बनाती हैं, चाहे उसकी क्षमता या दिव्यंग्यता कुछ भी हो। इससे विद्यार्थियों में एकता की भावना पैदा होती है और प्रत्येक विद्यार्थी को रचनात्मकता के माध्यम से स्वयं की अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है। एन.ई.पी. 2020 इस मान्यता पर आधारित है कि कला शिक्षा को विभिन्न विषयों के एक एकीकृत ढाँचे में शामिल किया जाना चाहिए। इससे विद्यार्थी कला को अन्य विषयों से जोड़ पाते हैं, जिससे ज्ञान की एक समग्र समझ विकसित होती है। उदाहरण के तौर पर, दृश्य कला को इतिहास या विज्ञान को संगीत के साथ मिलाकर चलाने वाले प्रोजेक्ट्स सुनिश्चित करते हैं कि विद्यार्थी विभिन्न अवधारणाओं का कई दृष्टिकोणों से अन्वेषण करें, जिससे उनकी आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता में वृद्धि हो।

## निष्कर्ष

भारतीय शिक्षा परिदृश्य में, एन.ई.पी. 2020 के अंतर्गत कला शिक्षा ने समग्र शिक्षा के समावेश से महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे हैं। इस नीति में न केवल रचनात्मकता, नवाचार एवं सांस्कृतिक संरक्षण पर बल दिया गया है, बल्कि विभिन्न विषयों के संयोजन द्वारा आलोचनात्मक चिंतन, रचनात्मकता एवं समस्या समाधान कौशल के विकास की भी सलाह दी गई है। मानव व्यक्तित्व के पंच आयामों के विकास की धारणा, जिसे 'पंचकोश विकास रूपरेखा' कहा जाता है, इस दृष्टिकोण का एक अभिन्न अंग है। फिर भी, प्रयासों के बावजूद पाठ्यक्रम में कला को अपेक्षाकृत सीमित स्थान, संसाधनों की कमी एवं पारंपरिक मूल्यांकन पद्धतियों की अड़चनें सामने आई हैं। एन.ई.पी. 2020 के अनुसार, कला शिक्षा में उचित निवेश, नवीन मूल्यांकन रणनीतियों का अंगीकरण तथा समाज में कला की महत्ता के प्रति जागरूकता बढ़ाना अत्यंत आवश्यक है। यह नीति विभिन्न विषयों से प्राप्त ज्ञान को रचनात्मक समस्या समाधान से जोड़कर विद्यार्थियों को जीवन की वास्तविक चुनौतियों के लिए प्रवीण बनाने का प्रयास करती है। एन.ई.पी. 2020 एवं एन.सी.एफ.-एस.ई. 2023 ने विशेष रूप से दिव्यांग बच्चों समेत समावेशी शिक्षा में कला की भूमिका को उजागर किया है। अध्ययन का मूलमंत्र यही रहा है कि कला शिक्षा, रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन एवं सांस्कृतिक जागरूकता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस संदर्भ में, यह अध्ययन नीतियों के निहितार्थ एवं उनके ऐतिहासिक विकास को समझने का प्रयास करता है।

भविष्य में, कक्षा में कला के समावेशन, दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए समावेशी कला शिक्षा, विभिन्न विषयों के एकीकृत दृष्टिकोण तथा सांस्कृतिक संरक्षण

से संबंधित व्यावहारिक चुनौतियों पर और अनुभवजन्य शोध किए जाने की संभावना उजागर होती है। अतः यह अध्ययन एन.ई.पी. 2020 एवं एन.सी.एफ.एस.ई. 2023 द्वारा प्रस्तुत नीतियों के कार्यान्वयन में आने वाली व्यावहारिक चुनौतियों की पड़ताल करता है तथा विद्यार्थियों एवं शिक्षकों की दृष्टिकोणों का दस्तावेजीकरण कर पाठ्यचर्या एवं नीतिगत सुधारों के लिए महत्वपूर्ण सुझाव प्रदान करता है।

## संदर्भ


कृष्णन, ए. 2020. इंडियन आर्ट एजुकेशन सिस्टम— अ गेटवे फॉर हैप्पी लाइफ. *एजुकेशन फॉर कॉन्स्शियंटाइजेशन : इमर्जिंग ग्लोबल ट्रेंड्स*. पृ.सं. 198–202.

टैगोर, आर. 1917. *पर्सनैलिटी*. मैकमिलन.

मानव संसाधन विकास मंत्रालय.1986. *नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 1986*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/upload_document/npe.pdf

रा.शै.अ.प्र.प. 2022. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर फाउंडेशनल स्टेज 2022*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/NCF_for_Foundational_Stage_20_October_2022.pdf

———. 2023. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन 2023*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/NCFSE-2023-August_2023.pdf

———. 2010. *कंट्री रिपोर्ट (2010) : आर्ट एजुकेशन इन इंडिया*. कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/deaa/pdf/1.pdf

रॉबर्टसन, सी. और ए. वेबर, 2007. *टीचिंग इंडियन आर्ट हिस्ट्री*. 21(13), पृ.सं. 341–356. https://doi.org/10.1080/09528820701362548

लेसार, इरेना. 2015. द रोल ऑफ द आर्ट्स इन टैगोर'स कॉन्सेप्ट ऑफ स्कूलिंग. *सेंटर फॉर एजुकेशनल पॉलिसी स्टडीज जर्नल*. 5., पृ.सं. 111–128. 10.26529/cepsj.131.

शर्मा, एम. 2012. इंडियन आर्ट एजुकेशन एंड टीचर आइडेंटिटी एज डेल्यूजो-गुआटेरियन असेंबलेज— नैरेटिव्स इन ए पोस्टकोलोनियल ग्लोबलाइजेशन कॉन्टेक्स्ट. द ओहायो स्टेट यूनिवर्सिटी, यू.एस.

शिक्षा मंत्रालय. 1968. *नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 1968*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/document-reports/NPE-1968.pdf

———. 2020. *नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

सुधीर, पी. 2015. *ट्रेनिंग पैकेज ऑन आर्ट एजुकेशन फॉर प्राइमरी टीचर्स (वॉल्यूम 1)*. कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/deaa/pdf/tpaev101.pdf